सीज़र शावेज़

लेखन: जिंजर वैडस्वर्थ

चित्र: मार्क श्रोडर

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

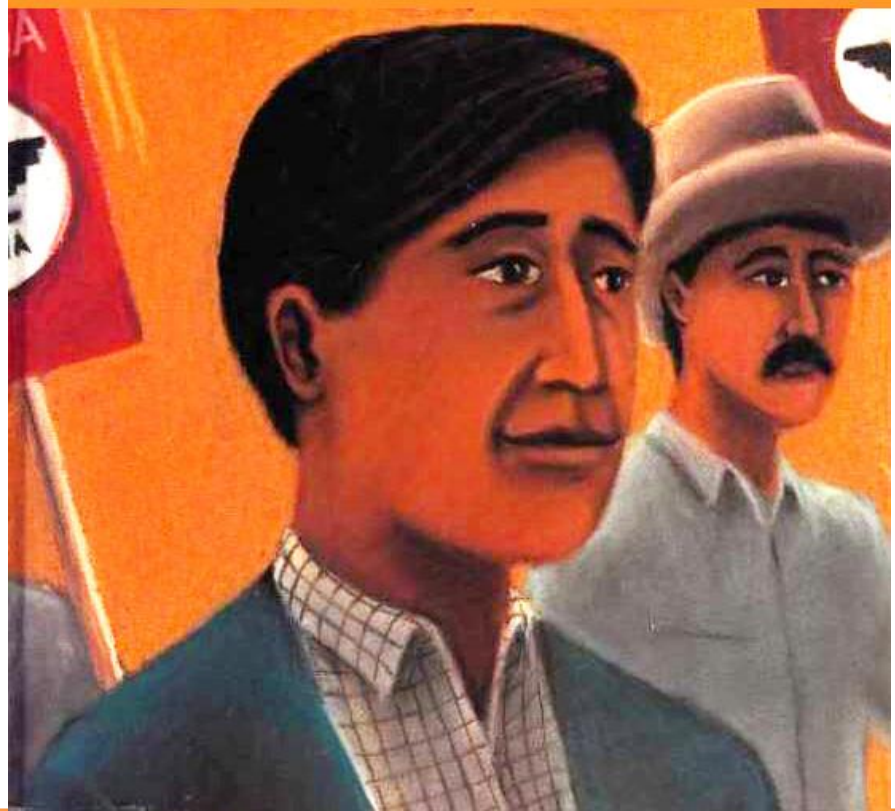

सीज़र शावेज़

लेखन: जिंजर वैडस्वर्थ

चित्र: मार्क श्रोडर

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

एरिज़ोना

1933

जब सिज़ारियो शावेज़ छह बरस का हुआ, उसके स्कूल जाने का समय आ चुका था।

सिज़ारियो अपनी बड़ी बहन रीता के साथ कच्ची सड़क पर बढ़ रहा था।

वह कुछ डरा-सहमा-सा था।

सो उसने रीता का हाथ थाम लिया।

उसके पैर दर्द कर रहे थे।

उसे जूते पहनने की आदत जो नहीं थी।

सिज़ारियो की शिक्षिका ने उसका नाम छोटा कर ‘सीज़र’ बना डाला।

उसने कहा, सीज़र कम मैक्सिकी लगता है।

शिक्षिका ने बच्चों को सिर्फ अंग्रज़ी में बोलने की हिदायत दी।

घर पर तो सब हिस्पानी बोलते थे।

सीज़र कई बार अंग्रेज़ी में बोलना भूल जाता था।

शिक्षिका तब उसकी उंगलियों पर रूलर से वार करती थी।

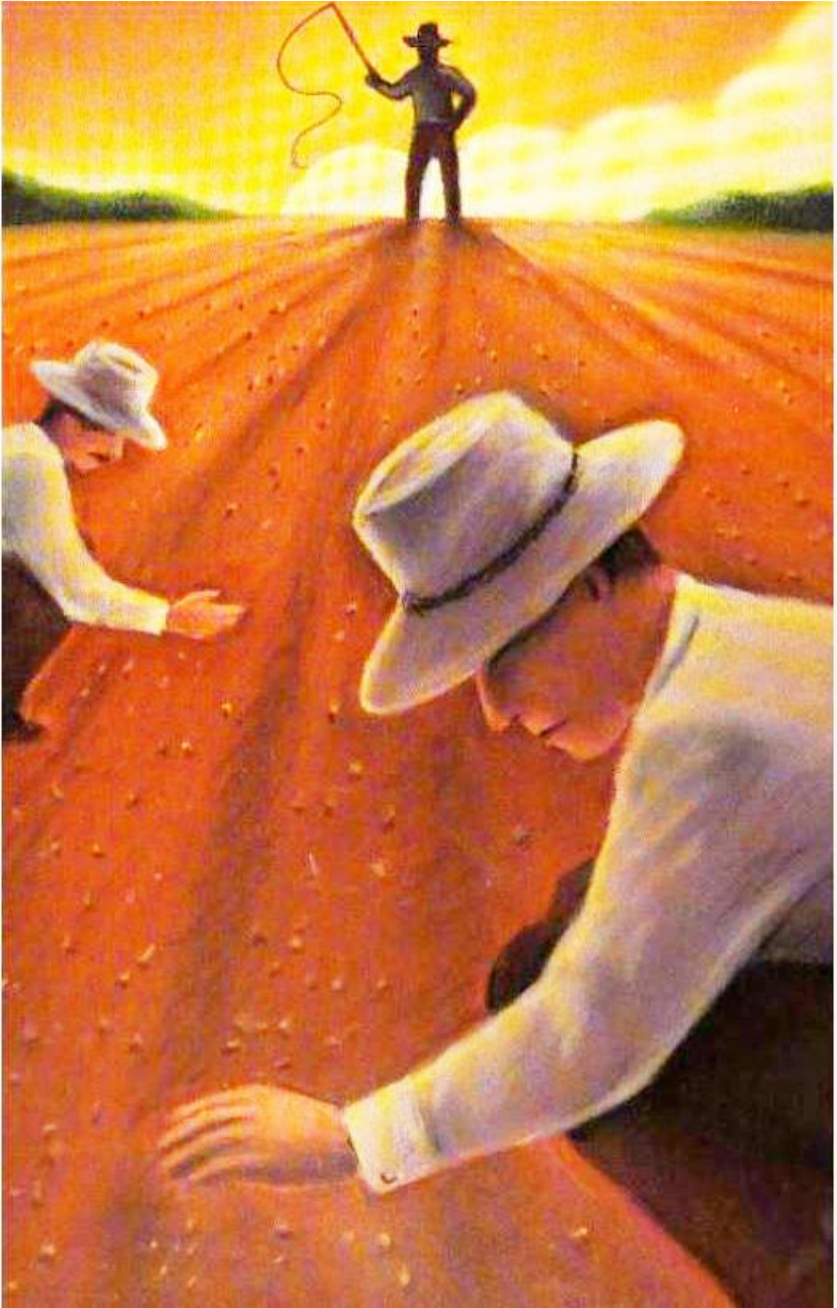

सीज़र के दादा-दादी मैक्सिको में जन्मे थे।

सीज़र के दादा एक सख़्त खेत मालिक के यहाँ मज़दूरी करते थे।

खेत मालिक अपने मज़दूरों को कोड़ों से पीटा करता था।

इससे परेशान हो आख़िरकार सीज़र के दादा एरिज़ोना भाग गए।

वे अपने परिवार को साथ लेते गए। सीज़र के पिता लिब्रादो, उसकी माँ जुआना से एरिज़ोना में मिले थे।

जुआना भी मैक्सिको में पैदा हुई थी।

सीज़र का जन्म यूमा, एरिज़ोना में हुआ था।

रिचर्ड और लैनी उसके छोटे भाई थे।

और सबसे छोटा विकी शिशु ही था।

वे मोटी अडोबे ईंटों से बने मकान में रहते थे।

उनका घर गर्मियों में ठण्डा और सर्दियों में गर्म रहता था।

सीज़र रात को अपने पिता को टीन के डब्बों और लकड़ी के टुकड़ों से खिलौने की गाड़ियाँ बनाते देखा करता था।

जब सोने का वक़्त होता दादी बच्चों को प्रर्थना करते सुनती।

शावेज़ परिवार में सब लोग खुद के खेत पर काम करते थे।

सीज़र के पिता माटी में बीज रोपते।

कुदाली से खरपतवार हटाते।

नदी से खेतों तक पानी लाने के लिए नहरें खोदते।

बिना पानी फसल उग ही नहीं सकती थी।

सीज़र और रिचर्ड घोड़ों ओर गायों को चारा-सानी देते और मुर्गियों को चुग्गा।

वे अण्डे इकट्ठा करते।

रीता हाथों से सबके कपड़े धोती।

जुआना कुटी मक्की से टोर्टिया (रोटी) बनाती।

उनका परिवार ग़रीब था।

इसके बावजूद जुआना बेघरों को खाना खिलाती।

उसका मानना था कि किसी भी इन्सान को भूखा नहीं रहना चाहिए।

सीज़र की चाचियाँ, मासियाँ, चचा, मौसा और उनके बच्चे पास ही रहा करते थे।

वे सब त्यौहार मनाने के लिए शावेज़ परिवार के खेत पर आते।

सब मिलजुल कर अच्छा खाना खाते।

सीज़र और उसके चचेरे-मौसेरे भाई-बहन नहरों में तैरते।

वे घुड़सवारी करते, पेड़ों पर चढ़ते।

उनका जीवन खुशनुमा था।

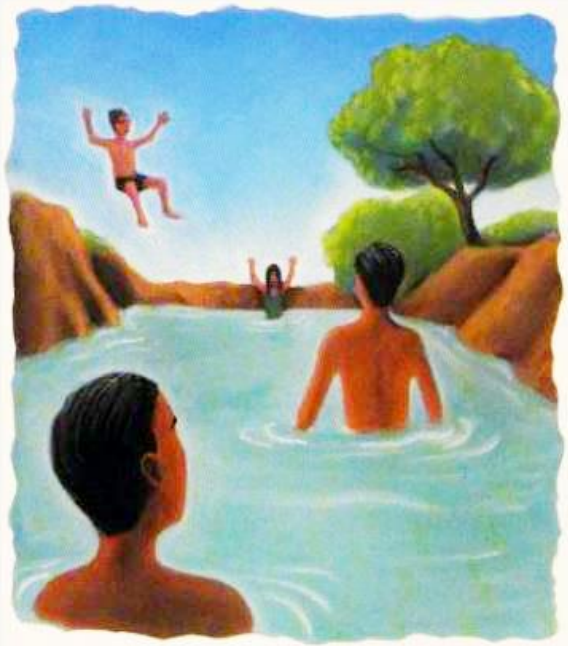

मुश्किल समय
1930 का दशक

1930 के दशक में अमरीका में लाखों लोग बेरोज़गार हो गए।

बैंक बन्द हुए।

कई दुकानें भी।

कई परिवारों के पास खाना तक खरीदने का पैसा न बचा।

उन्हें अपने घर, अपने खेत बेचने पड़े।

यह महामन्दी का दौर था।

पर शावेज़ परिवार के पास अब भी काफी दूध, अण्डे, और सब्ज़ियाँ थीं।

इतनी कि उन्हें बेचा जा सके और खाया भी।

तब अकाल पड़ा।

बरसात न होने से नहरें सूख गईं।

बिना पानी शावेज़ परिवार फसल नहीं उगा सका।

मुर्गियों के चुगने के लिए मक्का नहीं था।

सो मुर्गियों ने अण्डे देना बन्द कर दिया।

गायों के चरने के लिए घास नहीं थी।

सो उन्होंने दूध देना बन्द कर दिया।

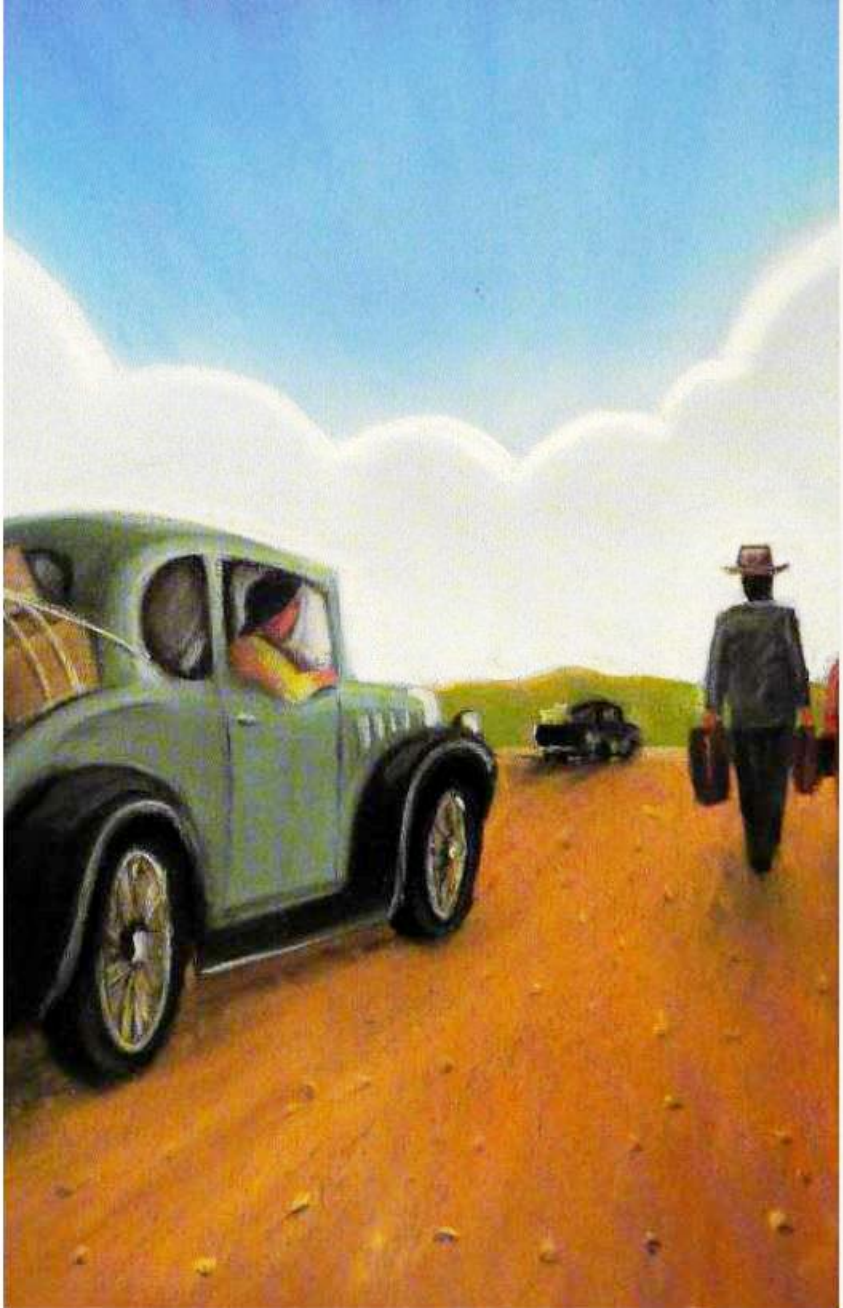

1938 में शावेज़ परिवार को मजबूर हो अपनी ज़मीन बेचनी पड़ी।

वे अपनी गाड़ी में सवार हो रोज़गार की तलाश में कैलिफोर्निया चले आए।

सीज़र तब 11 बरस का था।

कैलिफोर्निया में बड़े-बड़े खेत थे।

उन खेतों के मालिकों को बीज बोने, खरपतवार उखाड़ने और फ़सल काटने के लिए मज़दूरों की ज़रूरत पड़ती थी।

ग़रीब मज़दूर रोज़गार की तलाश में एक से दूसरे खेत जाते।

उन्हें 'माइग्रेन्ट वर्कर्स्' यानी प्रवासी श्रमिक कहा जाता था।

बसन्त के मौसम में शावेज़ परिवार इन खेतों में बुआई का काम करता।

खेतों में तब ठण्ड होती।

सीज़र अमूमन नंगे पैर काम करता।

जूते मंहगे जो थे।

गर्मियों में कड़ाके की धूप पड़ती।

सीज़र छोटे हत्थे वाली कुदाली से खरपतवार खोदता।

उसकी पीठ हमेशा दर्द करती।

दिन भर झुके-झुके काम करना आसान नहीं था।

उसे कभी खेतों में से उस ज़हर की बू आती जिसे कीटनाशक कहते हैं।

खेत मालिक कीटनाशकों छिड़काव इसलिए करते ताकि उनकी फसल में कीड़े न लगें।

पर कुछ कीटनाशक खेत मज़दूरों को बीमार कर देते थे।

मज़दूरों के बच्चे पेड़ों से संतरे और नींबू तोड़ते।

वे मटर और सेम की फलियाँ उतारते, कपास चुनते।

मज़दूर इन फलों और सब्ज़ियों को डब्बों में भरते।

हरेक डब्बे के वज़न के हिसाब से मज़दूरी का भुगतान होता।

ज़ाहिर था कि परिवार का हरेक सदस्य काम में जुटता।

अपनी ज़रूरत लायक पैसा कमा पाने का यही एक उपाय था।

अगर परिवार कम मेहनताने पर काम करने को राज़ी न होता, तो कोई दूसरा परिवार उनकी जगह काम करने को हाज़िर रहता।

जब एक खेत की फसल इकट्ठा हो जाती, शावेज़ परिवार दूसरे खेत की ओर बढ़ जाता।

उन्हें पैसों की ज़रूरत जो थी।

शावेज़ परिवार प्रवासी मज़दूरों के लिए बने शिविरों में टिकता था।

खेतों में बने ये शिविर भीड़-भाड़ वाले और गंदे होते थे।

शावेज़ परिवार को एक छोटी-सी कुटिया में ठंसना पड़ता।

कुटिया का फर्श कच्चा होता और नहानघर गायब।

बारिश पड़ने पर सब कुछ गीला हो जाता।

चारों ओर बस माटी-कीचड़ होता।

कई शिविरों में कुटिया तक न होती, सिर्फ तम्बू होते।

तम्बू बेहद छोटे होते।

सीज़र और रिचर्ड को बाहर सोना पड़ता।

रीता गाड़ी में सोती।

जुआना को बड़े भगोने में खाना बाहर ही पकाना पड़ता।

पर भूखों को वह तब भी खिलाती।

जब खाने के सामान की ज़रूरत होती सीज़र के माँ-बाप करीबी कस्बे में ख़रीददारी करने जाते।

कुछ दुकानों पर लिखा होता 'बिक्री सिर्फ गोरों को' की जाएगी।

सीज़र का परिवार मूलतः मैक्सिको से था।

वे इन दुकानों में ख़रीददारी नहीं कर सकते थे।

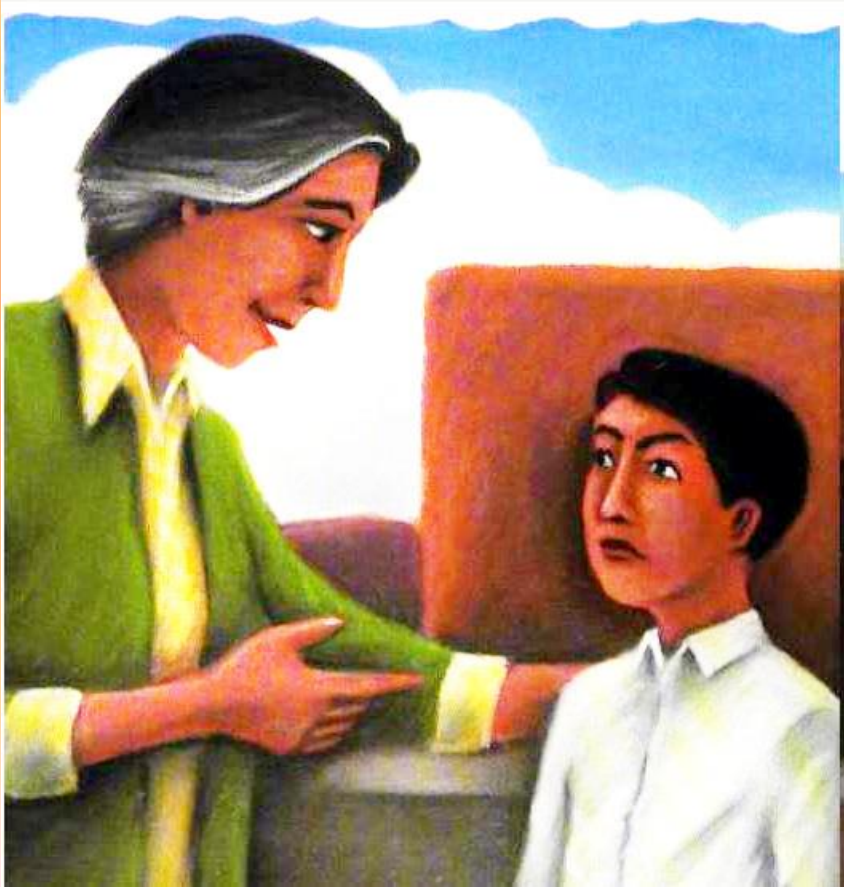

सीज़र को एरिज़ोना की याद सताती।

वह घुड़सवारी करना चाहता था।

वह पेड़ों पर चढ़ना चाहता था।

जब उसकी खिलौने वाली मोटरगाड़ी चोरी हो गई उसकी इच्छा हुई कि वह चोर को पकड़ कर अच्छे से पीटे।

जुआना ने अपने बेटे को लड़ने से मना किया।

वह हमेशा कहती लड़ने के लिए दो जनों की दरकार होती है।

साथ ही जोड़ती, 'अपनी समस्याएं लफ्ज़ों से सुलझाओ।'

बड़ा होना

1942

जब सीज़र 15 बरस का हुआ डेलानो, कैलिफोर्निया में उसकी मुलाकात हैलन फबेला से हुई।

हैलन के माता-पिता भी डेलानो में कपास चुनने आए थे।

1948 में हैलन और सीज़र की शादी हुई।

अगले साल उनके पहले बेटे फर्नान्डो का जन्म हुआ।

जल्द ही और बच्चे भी हुए।

सीज़र और हैलन कड़ी मेहनत-मशक्कत करते।

वे फलियाँ, स्ट्रॉबैरी और तमाम दूसरी फसलें उतारते।

दोनों को फी घंटे की मेहनत के करीब एक डॉलर मिलते।

यह बच्चों के खाने, कपड़े और एक साधारण से घर के लिए नाकाफ़ी था।

सीज़र का मानना था कि प्रवासी मज़दूरों को बेहतर भुगतान किया जाना चाहिए।

सीज़र ने नेताओं पर किताबें पढ़ीं।

वह सीखना चाहता था कि नेता लोगों के जीवन को सुधारने में मदद कैसे करते हैं।

तब सीज़र की मुलाकात डेलोरस वेरता से हुई।

डेलोरस मैक्सिकी-अमरीकी खेत मज़दूरों की मदद करती थी।

सीज़र फ्रैड रॉस से भी मिले।

फ्रैड चाहते थे कि प्रवासी मज़दूरों को अमरीकी नागरिकता मिले।

ताकि वे भी मत डाल सकें।

वे मज़दूरों के हित में मत डालें।

डेलोरस और फ्रैड के कुछ विचार बढ़िया थे।

वे दोनों मानते थे कि अगर लोग एकजुट हो जाएं तो वे अपना जीवन बदल सकते हैं।

ग़रीब मैक्सिकी-अमरीकी मज़दूर अगर एकजुट हों जाएं तो वे भी ताकतवर बन सकते हैं।

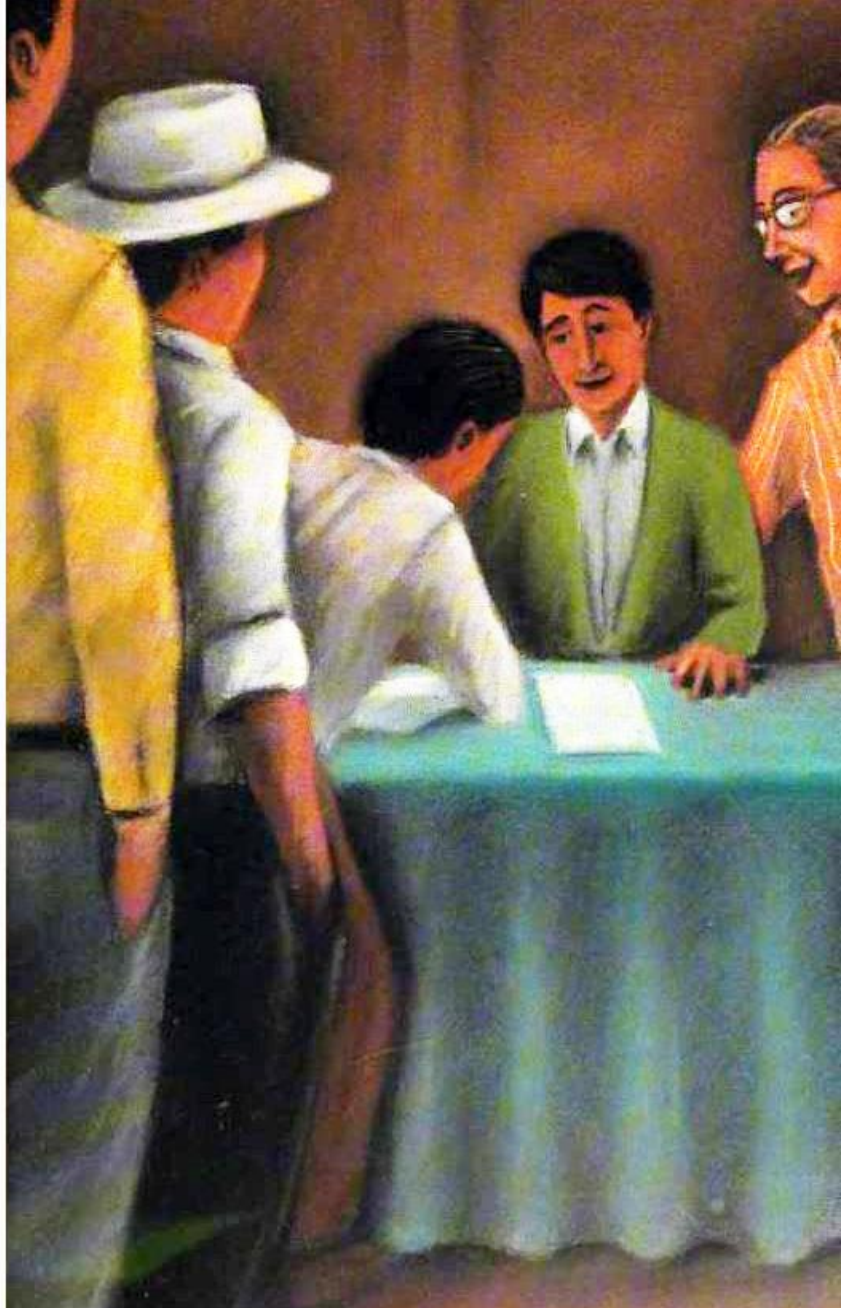

अपनी माँ की ही तरह सीज़र भी दूसरों की मदद करना चाहता था।

सो उसने मैक्सिकी मूल के अमरीकियों की मदद मतदान के लिए पंजीकरण करवाने में की।

सीज़र और डेलोरस ने मज़दूरों की एक यूनियन (संघ) की शुरुआत की, यानी मज़दूरों का समूह बनाया।

संयुक्त राज्य अमरीका में खेतिहर मज़दूरों की यह पहली यूनियन थी।

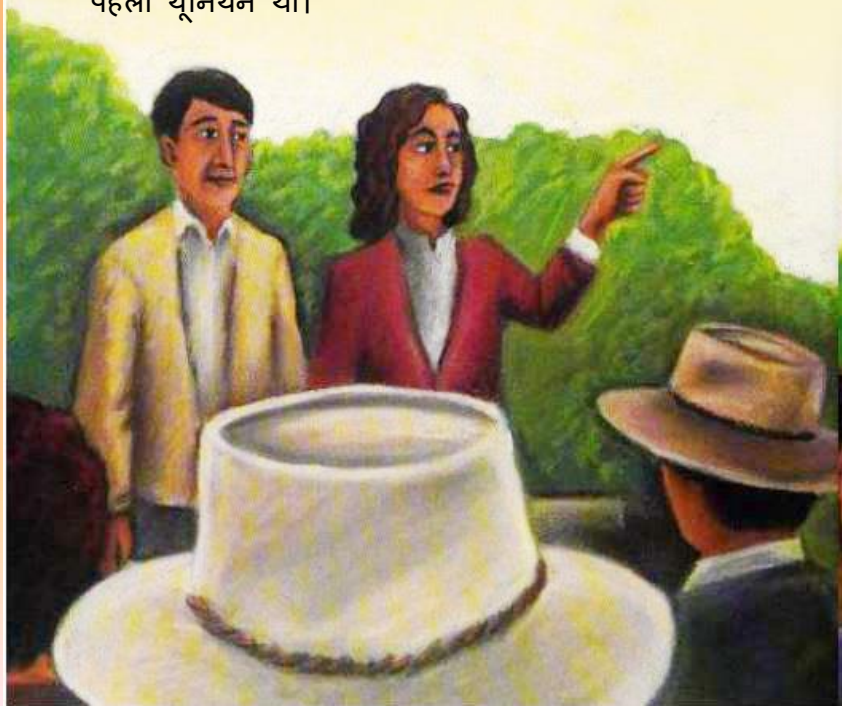

सीज़र ने समूचे कैलिफोर्निया में यात्राएं कीं।

जिन कस्बों में खेती होती थी वहाँ जा मज़दूरों से यूनियन के बारे में बात की।

अगर वे यूनियन से जुड़ते तो वह उन्हें बताता कि वे एक टीम, एक दल हैं।

वे अपने खेत मालिकों से बदलाव लाने को कह सकते हैं।

अगर मालिक मुकरें तो वे हड़ताल कर सकते हैं।

यानी यूनियन के सदस्य तब तक काम बन्द कर सकते हैं जब तक मालिक बदलाव लागू न करें।

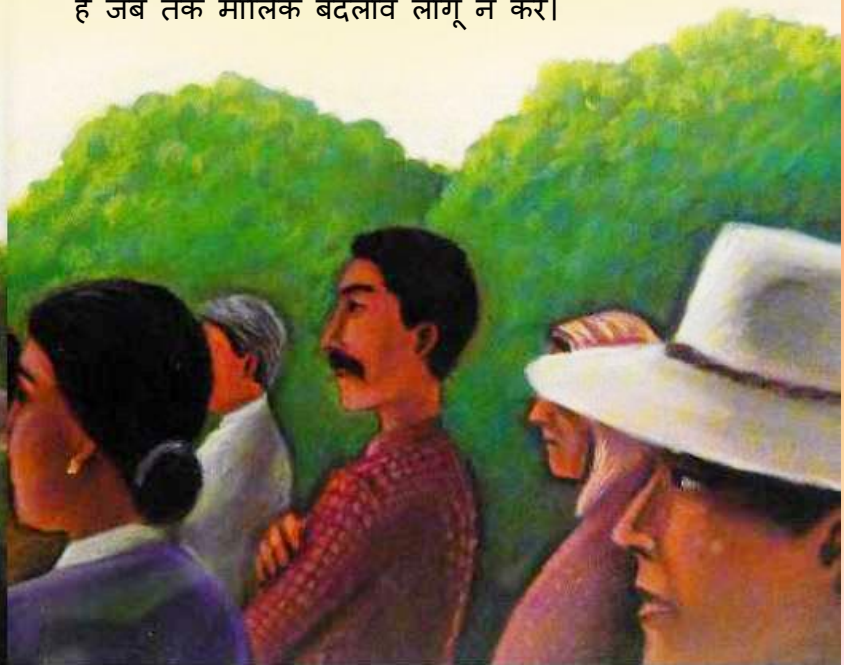

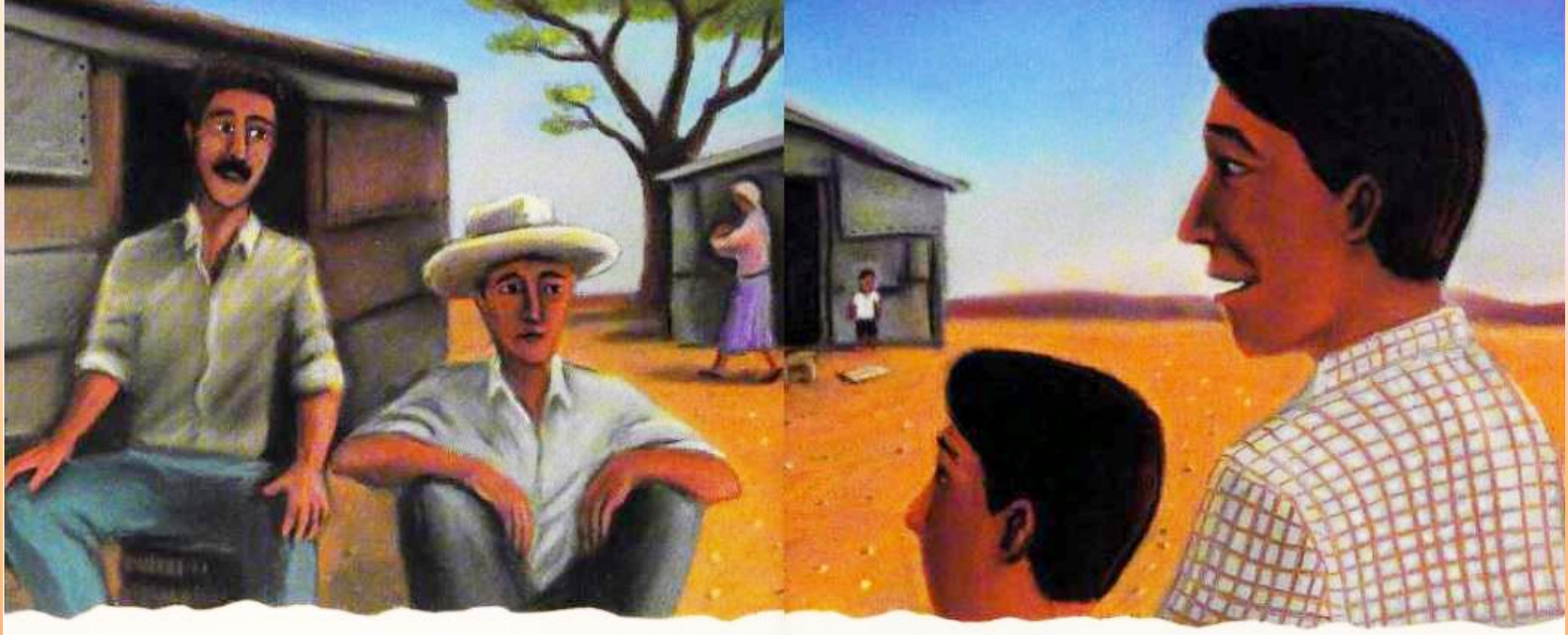

कई मज़दूर सीज़र की बात सुनते।

वह एक काबिल नेता था।

उन्हें लगता कि हो सकता है सीज़र सही हो।

मज़दूर झोंपड़ियों और तम्बुओं में रहने से उकता चुके थे। वे ऐसे कीटनाशकों के साथ काम नहीं करना चाहते थे जो उन्हें बीमार बना रहे थे।

उन्हें मालूम था कि बदलाव लाना मुश्किल होगा।

सीज़र भी यह जानता था।

पर वह फिर भी कोशिश करना चाहता था।

सीज़र यह सब बिना हिंसा, शान्ति से करना चाहता था।

मुक्कों से लड़ने में सीज़र का विश्वास नहीं था।

कई लोगों की धारणा थी कि सीज़र असफल रहेगा।

क्योंकि अधिकतर खेत मालिक या तो धनी परिवार थे या बड़ी कम्पनियाँ।

इधर सीज़र ग़रीब था।

उसकी चमड़ी का रंग गोरा नहीं, गहरा था।

वह महज एक खेत मज़दूर भर था, हज़ारों मज़दूरों में एक।

कर्म

1965

सीज़र एक ताकतवर यूनियन नेता बनता गया।

यूनियन ने तय किया कि हड़ताल करने का समय आ चुका है।

फैसला हुआ कि कैलिफार्निया में मज़दूर अंगूर की फसल नहीं उतारेंगे।

अंगूर बेलों पर लटके-लटके सड़ गए।

खेत मालिकों को नुकसान हुआ।

सीज़र ने ख़रीददारों से कहा कि वे अंगूर न ख़रीदें।

कई परिवारों ने यह बात मानी।

उन्होंने अंगूर नहीं ख़रीदे।

कुछ दुकानों ने अंगूर बेचना ही बन्द कर दिया।

कई ट्रक चालकों ने अंगूर ढ़ोने से इन्कार कर दिया।

खेत मालिकों को और नुकसान हुआ।

इधर मज़दूर फिक्र करने लगे।

उन्हें पैसा नहीं मिल रहा था।

अपने परिवारों को वे क्या और कैसे खिलाएं ?

उन्हें दूसरी फसलों को काटने का काम तलाशने की ज़रूरत थी।

सीज़र ने उन्हें धीरज धरने को कहा।

कहा कि मज़दूरों के भी अधिकार हैं।

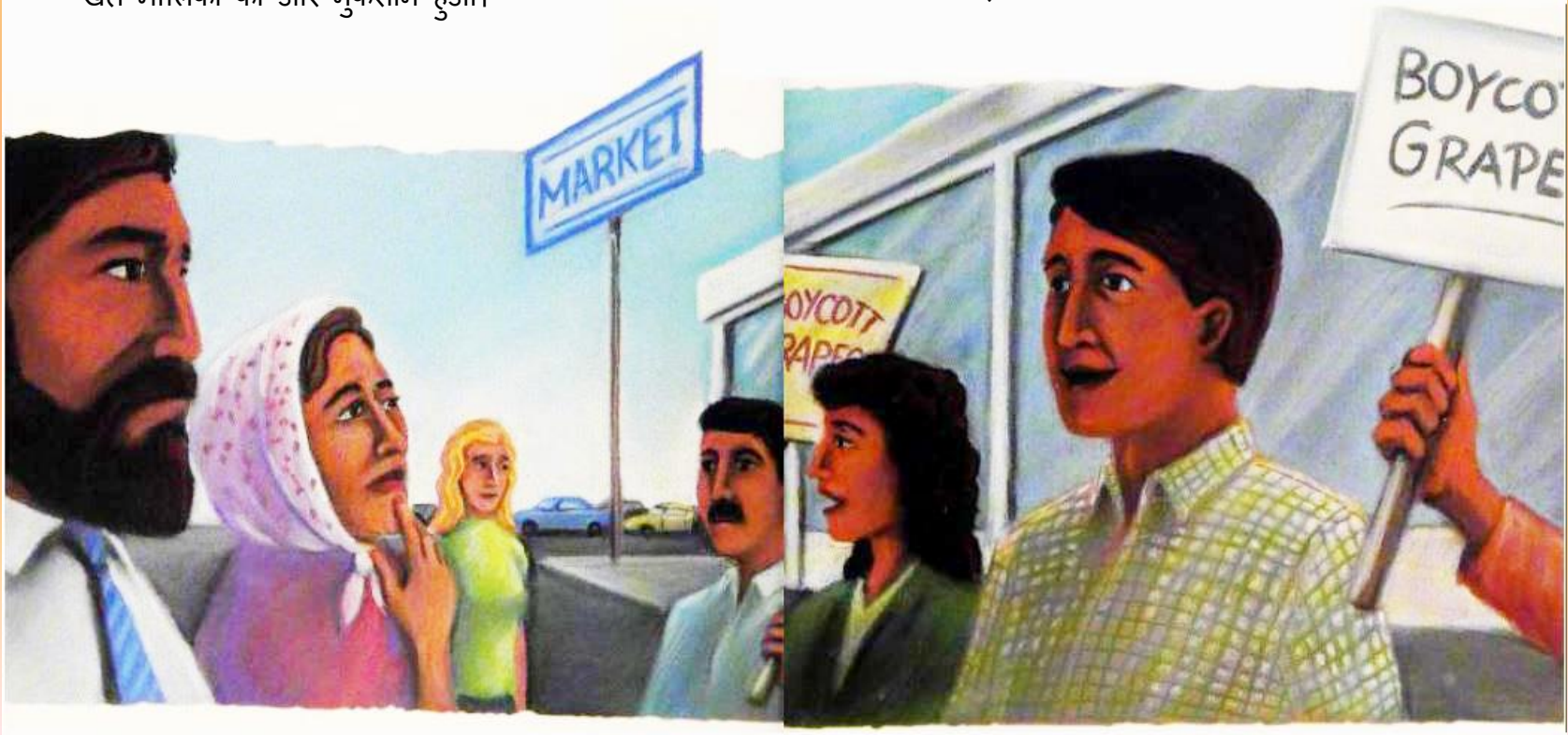

एक पूरा साल गुज़र गया।

हड़ताल के बारे में दूसरे लोगों को बताने का समय आ चुका था।

सीज़र ने 1966 में कैलिफोर्निया की राजधानी सैक्रामेंटो तक जुलूस का नेतृत्व किया।

डेलानो से सैक्रामेंटों तक की 300 मील की दूरी पैदल चल तय करने में पूरे 25 दिन लगे।

पर इससे बात चारों ओर फैली।

दूसरे राज्यों के मज़दूर भी सीज़र के साथ जुलूस में शामिल होने आए।

अभिनेता, नेता, छात्र और सरकारी अधिकारी भी मज़दूरों के साथ कदम मिला चले।

रास्ते में कई मज़दूरों ने उनके लिए खाने और पानी की व्यवस्था की।

सीज़र के पैर थक चले थे।

उसे तेज़ बुखार भी चढ़ा।

पर सीज़र चलता रहा।

लोगों ने अख़बारों में जुलूस के बारे में पढ़ा।

उन्होंने टेलिविज़न पर उसकी ख़बर देखी।

कुछ लोगों को लगा प्रवासी मज़दूरों की मदद की जानी चाहिए।

तो कुछ दूसरे इससे असहमत थे।

अंगूर हड़ताल जारी रही।

दूसरे राज्यों में भी अमरीकियों ने अंगूर ख़रीदना बन्द कर दिया।

सीज़र और यूनियन का असर होता दिख रहा था।

आख़िरकार पाँच सालों बाद अंगूर बागानों के मालिकों ने घुटने टेके।

1970 में हड़ताल खत्म हुई।

मज़दूरों को बेहतर मज़दूरी मिलने लगी।

उन्हें डॉक्टरी इलाज के पैसे मिले।

सीज़र बेहद थका हुआ था, पर बेहद खुश भी।

मज़दूर काम पर लौटे।

हड़ताल के बाद

1970

सीज़र और हैलन का रहन-सहन सादा था।

उनके आठ बच्चे थे।

यूनियन उनके रहने और खाने के लिए पैसा मुहैय्या करवाती थी।

सो सीज़र अपने परिवार का गुज़ारा चला सकता था।

सीज़र हर दिन यूनियन के लिए काम करता था।

वह बैठकों में जाता।

नए जुलूसों का नेतृत्व करता।

वह मुद्दों पर भाषण देता।

वह यह सुनिश्चित करना चाहता था कि सभी खेत मज़दूरों के साथ न्यायपूर्ण बरताव हो।

वह अक्सर सप्ताहों तक घर से दूर रहता।

हमेशा थका-मांदा रहता।

1993 की एक रात सीज़र की मौत हो गई।

उनके सदय दिल ने दम तोड़ दिया था।

वे सिर्फ 66 बरस के थे।

सीज़र के सम्मान में कैलिफोर्निया के झण्डे आधे नवा दिए गए।

सीज़र के भाई रिचर्ड ने उनके लिए देवदार का ताबूत बनाया।

सीज़र को डेलानो में दफनाया गया।

उनकी मैयत में 40,000 लोगों ने शिरकत की।

सीज़र ने जीवन भर लोगों की मदद जो की थी।

उन्होंने मुक्कों से नहीं लफ्ज़ों से मदद की थी।

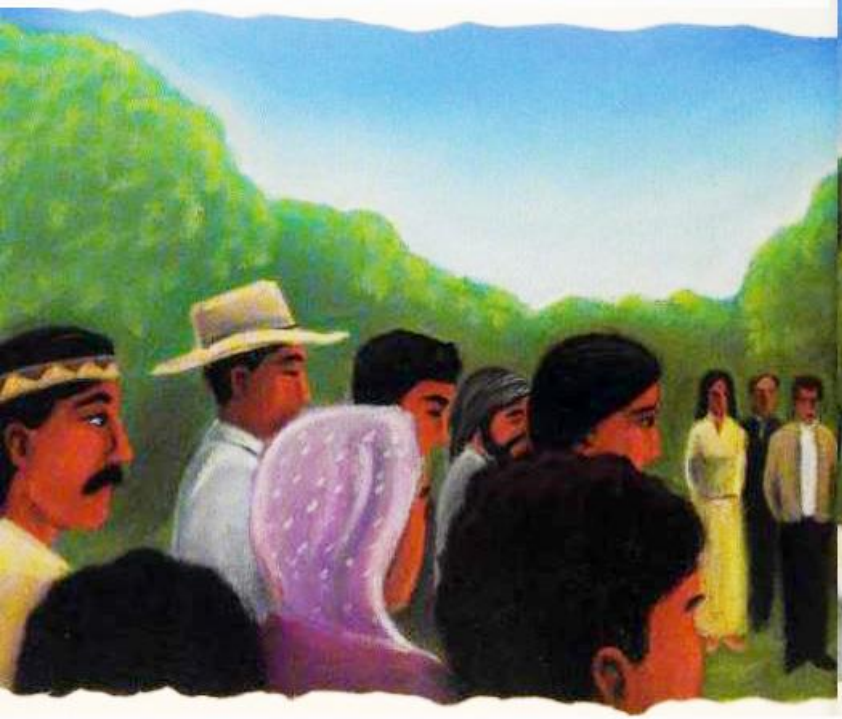

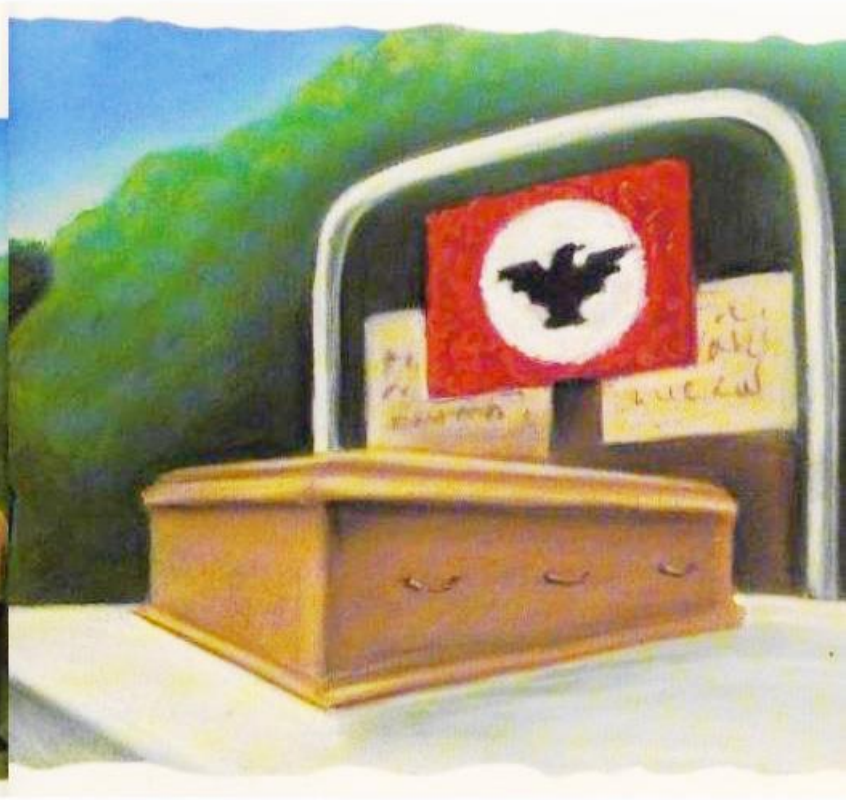

सीज़र शावेज़ पहली अंगूर हड़ताल की
बीसवीं सालगिरह पर बोलते हुए।

सीज़र शावेज़ के योगदान के लिए उन्हें कई लोगों ने नवाज़ा। 1990 में मैक्सिको ने उन्हें एज़टैक ईगल प्रदान किया, जो मैक्सिको का सर्वोच्च सम्मान है। 1994 में, सीज़र की मृत्यु के साल भर बाद शावेज़ परिवार वॉशिंगटन डी.सी. गया। वहाँ परिवार ने व्हाइट हाउस में सीज़र की स्मृति में दिए गए प्रेसिडेन्शियल मैडल ऑफ फ्रीडम को स्वीकारा।

अहिंसक तरीकों से बदलाव लाने में विश्वास करने वाले अन्य नेताओं से सीज़र ने प्रेरणा ली थी। मोहनदास कर्मचन्द गांधी और मार्टिन लूथर किंग, ऐसे दो नेता थे। सीज़र का मनना था कि जब तक दुनिया के सभी इन्सानों को बुनियादी मानव अधिकार हासिल नहीं हो जाते, तब तक मोटरगाड़ी, टेलिविज़न और विलास की दूसरी चीज़ों का उपयोग करना सही नहीं है।

सीज़र शावेज़ और डेलोरस वेरता ने 1962 में नैशनल फार्म वर्कर्स् एसोसिएशन की स्थापना की। यह संस्था बाद में यूनाइटेड फार्म वर्कर्स् एसोसिएशन ऑफ अमेरिका (यूएफडब्ल्यू) कहलाई। सीज़र के कई साथी और उनके बच्चे उनके बाद भी यूएफडब्ल्यू में काम करते रहे। यूएफडब्ल्यू के सदस्य अब भी हर साल कैलिफोर्निया की राजधानी सैक्रामेंटो तक कूच करते हैं। वे राज्य सरकार पर प्रवासी श्रमिकों के हित में बदलाव लाने और कानून बनाने का दबाव बनाते हैं। जुलूस में उनका नारा होता है 'वीवा ला कॉज़ा!' यानी 'मकसद जिन्दाबाद!'।

कैलिफोर्निया में हर 31 मार्च को शावेज़ को सम्मानित किया जाता है। किसी लातिनो नेता के नाम पर घोषित किया गया यह पहला अवकाश है। बच्चे शावेज़ के बारे में पढ़ते हैं। वे उनके जीवन का उत्सव मनाते हैं। कई स्कूलों, मार्गों और पार्कों को उनका नाम दिया गया है।

अमरीका में लाखों प्रवासी मज़दूर रहते हैं। उन्हें कठिन और ख़तरनाक कामों के लिए कम मेहनताना दिया जाता है। प्रवासी मज़दूर अन्य मज़दूरों की तुलना में अधिक आसानी से बीमारी पड़ते हैं। उनके बच्चे ग़रीबी में पलते हैं। उनमें से कई बच्चों को कैंसर का रोग होता है। चिकित्सकों और सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं का मानना है कि ऐसा उन कीटनाशकों और ज़हरीले रसायनों के कारण होता है जिनका कृषि में उपयोग होता है।

सीज़र शावेज़ ने अपना पूरा जीवन दूसरों की मदद करने में लगा दिया था। और यह काम जारी रहना चाहिए। उन्होंने 1968 में कहा था, "हमारे पास बस हमारी ज़िन्दगी ही तो है जो यह तय करती है कि हम किस तरह के इन्सान हैं।"

महत्वपूर्ण तिथियाँ

1927 - 31 मार्च को यूमा, एरिज़ोना के पास सीज़र शावेज़ का जन्म।

1937-44 - अपने परिवार के साथ प्रवासी खेत मज़दूर की तरह कैलिफोर्निया में कई जगह काम किया।

1942 - आठवी कक्षा की पढ़ाई पूरी की।

1944 - अमरीकी नौसेना में भरती हुए।

1948 - हैलन फाबेला के साथ विवाह।

1962 - नैशनल फार्म वर्कर्स् एसोसिएशन शुरू किया।

1965 - अंगूर तोड़ने वाले श्रमिकों की हड़ताल आरंभ हुई।

1966 - सैक्रामेंटो तक पैदल विरोध जुलूस का नेतृत्व किया।

1970 - अंगूर बागानों के मालिकों ने यूनियन की मांगे मानीं। लैटिस (सलाद पत्ते) श्रमिकों की हड़ताल वापस लेने से इन्कार करने पर सीज़र को जेल जाना पड़ा।

1972 - एनएफडब्ल्यूए का नाम बदल कर युनाइटेड फार्म वर्कर्स् ऑफ अमेरिका रख दिया गया।

1975 - कैलिफोर्निया ने एग्रीकल्चरल लेबर रिलेशन्स् एक्ट पारित किया। कृषि मज़दूरों के अधिकारों से जुड़ा यह पहला कानून था।

1988 - सीज़र ने कीटनाशकों के उपयोग का विरोध किया।

1990 - सीज़र को मैक्सिको के सर्वोच्च सम्मान 'अगिला एज़टैका' यानी एज़टेक ईगल से नवाज़ा गया।

1993 - 21 अप्रेल को एरिज़ोना में मृत्यु।

1994 - सीज़र को मरणोपरान्त प्रैसिडेन्शियल मैडल ऑफ फ्रीडम प्रदान किया गया। उनके परिवार ने सीज़र ई. शावेज़ फाउन्डेशन की स्थापना की।